वार्षिक पत्रिका का 21वाँ अंक, वर्ष 2026

ESTD 1880

संत अलोशियस (मानित) विश्वविद्यालय
मंगळूरु–575003, भारत

प्रेरणा

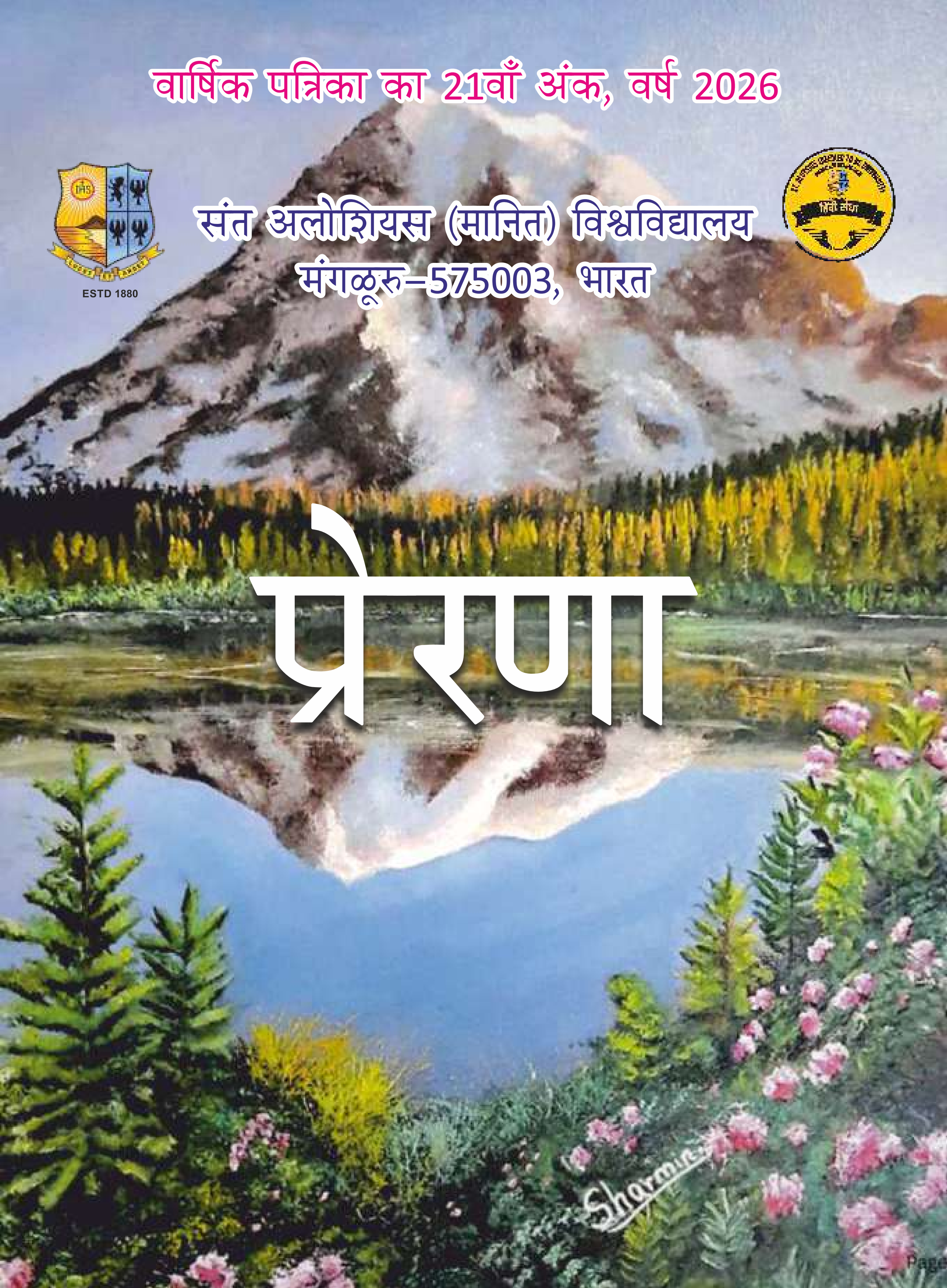

हिंदी प्राध्यापक : डॉ. मुकुंद प्रभु, डॉ. महबूबअलि अ. नदाफ, डॉ. संध्या यू. सिर्सिकर और सुश्री. रॉयसी रेखा ब्रग्गस

हिंदी प्राध्यापक तथा हिंदी संघ के सदस्य

गत वर्ष (2024-25) के सचिवः
अरमान और आएशा निहाला

संपादक समिति :
हिंदी प्राध्यापक, मुदस्सीर और प्रिन्सीया

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

हर्ष और गर्व का विषय है कि वार्षिक हिंदी पत्रिका "प्रेरणा" का 21वाँ अंक आपके हाथों में है। यह पत्रिका केवल लेखन का संकलन नहीं, बल्कि हमारे विद्यार्थियों की सृजनशीलता, संवेदनशीलता और विचारशीलता का जीवंत दस्तावेज है। इसमें हिंदी विभाग द्वारा आयोजित विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं की रचनाएँ, लेखन में रुचि रखने वाले छात्रों के लेख तथा कक्षा लेखन कार्य प्रकाशित किए गए हैं। इन रचनाओं में समाज, संस्कृति, शिक्षा और मानवता के अनेक आयामों पर प्रकाश डाला गया है। कविता, लेख, चुटकुले और अनुभवों के माध्यम से छात्रों ने अपनी कल्पनाओं को अक्षरों में पिरोकर एक सुंदर साहित्यिक संसार रचा है।

संत अलोशियस (मानित) विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग सदैव पाठ्यक्रम के साथ-साथ सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को भी महत्व देता है। हिंदी संघ के सहयोग से आयोजित अतिथि व्याख्यान, कार्यशालाएँ, वेबिनार, विचार गोष्ठियाँ और प्रतियोगिताएँ छात्रों को नई दृष्टि प्रदान करती हैं। इन्हीं गतिविधियों का उत्कर्ष है वार्षिक अंतर-महाविद्यालयीय हिंदी उत्सव "प्रेरणा", जो इस बार राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया जा रहा है। देश के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिभागियों का उत्साह इस उत्सव को और भी जीवंत बना रहा है।

"प्रेरणा" पत्रिका-2026 को समृद्ध बनाने में मार्गदर्शन करने के लिए हमारे कुलपति रे. डॉ प्रवीण मार्टिस एस् जे तथा विभागाध्यक्ष, डॉ मुकुंद प्रभु जी को तहे दिल से कृतज्ञता ज्ञापित्त करता हूँ। भावी रचनाकारों तथा प्रकाशन कार्य में सहयोग देने वाले सभी प्राध्यापक बंधुओं को मैं हृदय से अभिनंदन करता हूँ। आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान हैं, क्योंकि आपके सहयोग से ही यह पत्रिका निरंतर अधिक सृजनात्मक, उपयोगी और प्रेरणादायी बन सकती है।

मंगळूर

फरवरी 2026

डॉ. महबूबअलि अ. नदाफ
सह प्राध्यापक

कुलपति का संदेश

प्रेरणा जैसी विभागीय पत्रिकाएँ किसी भी शैक्षणिक संस्था की बौद्धिक चेतना और सृजनात्मक ऊर्जा का सजीव प्रतिबिंब होती हैं। हिंदी विभाग द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका भाषा, साहित्य और संस्कृति के संवर्धन की दिशा में एक सार्थक एवं सराहनीय प्रयास है।

हिंदी केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान, संवेदनशीलता और बौद्धिक परंपरा की वाहक है। आज के वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा का अध्ययन, अनुसंधान और सृजनात्मक प्रयोग अत्यंत प्रासंगिक हो गया है। प्रेरणा में संकलित लेख, कविताएँ, शोध आलेख एवं विचार विद्यार्थियों और शिक्षकों की साहित्यिक दृष्टि, मौलिक सोच और रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करते हैं। मुझे प्रसन्नता है कि हिंदी विभाग निरंतर अकादमिक गुणवत्ता, साहित्यिक नवाचार और सामाजिक सरोकारों को केंद्र में रखते हुए कार्य कर रहा है। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में सहायक होगी, बल्कि हिंदी भाषा के प्रति रुचि, सम्मान और प्रतिबद्धता को भी सुदृढ़ करेगी।

मैं इस सफल प्रकाशन के लिए हिंदी विभाग के सभी शिक्षकों, संपादक समिति और विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि प्रेरणा भविष्य में भी ज्ञान, विचार और सृजन की यह ज्योति प्रज्वलित करती रहे। मेरी शुभकामनाएँ।

रे. डॉ. प्रवीण मार्टिस एस् जे
कुलपति

विभागाध्यक्ष का संदेश

संत अलोशियास महाविद्यालय में गत चालीस सालों से हिन्दी अंतर महाविद्यालयीन उत्सव ''प्रेरणा'' की धारा अक्षुण्ण रूप से प्रवाहमान है। इस उत्सव के दौरान विगत तीस सालों से यह प्रेरणा पत्रिका भी प्रकाशित होते आयी है। इसमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने अपनी मौलिक प्रतिभा को लिपिबद्ध किया है। कहानी हो या कविता, चुटकुले हो या शेर और शायरिया, विचारोत्तेजक लेख हो या वैचारिक अनुसंधान से जुड़े लेख विद्यार्थियों ने हर दिशा में अपनी मनोभावना एवं विचारों को अभिव्यक्त किया है।

मंगळूरु विश्वविद्यालय के तहत महाविद्यालय के रूप में, स्वायत्त महाविद्यालय के रूप और आज संत अलोशियस मानित विश्वविद्यालय के रूप में लगातार ज्ञानदान देनेवाली संत अलोशियस संस्था में हिन्दी विभाग ने अपना योगदान भी लगातार दिया है। इस संस्था में अध्ययन कर रही युव पीढ़ी ने अपने अपने विचारों को इस एक्कीसवें अंक में लिपिबद्ध किया है। पुराने जड़ों के साथ नए कोंपलों को उगने की प्रक्रिया बहुत सुंदर और मजबूति के साथ हो रही है। अनेक विद्यार्थियों ने अपनी लेखनी आजमाकर इस पत्रिका की मान और शान बढ़ायी है। विभागाध्यक्ष के नाते मैं सब को धन्यवाद देता हूँ और आप सब से निवेदन करता हूँ कि इन नौसिखिए लेखकों को प्रोत्साहित करके इन्हें आगे बढ़ने के आशीर्वाद दे।

विभाग के हिन्दी अध्यापक डॉ महबूबअली अ नदाफ, डॉ. संध्या सिर्सिकर एवं मिस रेखा रोड्सी ब्राग्स और हिन्दी संघ के द्वारा हमारे विद्यार्थियों की पढ़ने की, सोचने की, समझने की, लिखने की और बोलने की क्षमताओं को सुधारते उनको एक जिम्मेदार नागरिक बनाने का कार्य सफलतापूर्वक कर रहे हैं। इसलिए मैं सब को तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ।

इन सब कार्यों में हमें मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन देनेवाले हमारे विश्वविद्यालय के कुलपति रे. डॉ. प्रवीण मार्टिस, एस.जे. जी को भी मैं धन्यवाद देता हूँ।

इस पत्रिका को सुंदर ढंग से प्रकाशित करनेवाले संपादक, विभाग के अध्यापक डॉ महबूबअली अ नदाफ जी को भी मैं धन्यवाद देता हूँ।

डॉ. मुकुंद प्रभु
विभागाध्यक्ष

हिंदी संघ के अध्यक्ष का संदेश

"प्रेरणा" केवल एक नाम नहीं, बल्कि चेतना की वह ज्योति है जो युवा मन के अंधकार को आलोकित करती है। यह इंटर कॉलेजिएट उत्सव ज्ञान, कल्पना और सृजन के संगम पर खड़ा एक ऐसा मंच है, जहाँ विचार शब्द बनते हैं, शब्द अभिव्यक्ति और अभिव्यक्ति भविष्य का निर्माण करती है।

विविध महाविद्यालयों से आए प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की सहभागिता इस उत्सव को जीवंत बनाती है। यहाँ प्रतिस्पर्धा भी सहयोग का रूप धारण कर लेती है और हर प्रस्तुति आत्मविश्वास, अनुशासन तथा नवाचार की सुगंध बिखेरती है। "प्रेरणा" युवाओं को न केवल अपनी प्रतिभा पहचानने का अवसर देती है, बल्कि समाज के प्रति अपने दायित्वों को समझने की दृष्टि भी प्रदान करती है।

यह उत्सव इस विश्वास का प्रतीक है कि जब युवाओं को सही दिशा और मंच मिलता है, तब वे असंभव को भी संभव कर दिखाते हैं। हम कामना करते हैं कि "प्रेरणा" आने वाले वर्षों में भी विचारों को पंख, सपनों को उड़ान और प्रतिभा को पहचान देती रहे। "देसी कलाकार" उस मिट्टी की सुगंध है, जिसमें हमारी संस्कृति की जड़ें गहराई तक समाई हैं। यह थीम उस अनगढ़ प्रतिभा को नमन है, जो साधनों की कमी में भी अपनी कला से संसार को रंगों, सुरों और शब्दों से भर देती है। "प्रेरणा" के इस इंटर कॉलेजिएट उत्सव में देसी कलाकार केवल मंच पर नहीं, बल्कि आत्मा में उतरता हुआ दिखाई देता है।

यहाँ लोकधुनों की थाप, पारंपरिक रंगों की आभा और स्वदेशी भावनाओं की अभिव्यक्ति, आधुनिकता के साथ सुंदर सामंजस्य स्थापित करती है। हर प्रस्तुति उस कलाकार की कहानी कहती है, जो अपनी जड़ों से जुड़ा रहकर भी नए क्षितिज गढ़ने का साहस रखता है।

"प्रेरणा" इस विश्वास को सशक्त करती है कि सच्ची कला दिखावे की मोहताज नहीं होती। वह हृदय से जन्म लेती है और हृदय तक पहुँचती है। यह उत्सव हमारे देसी कलाकारों को पहचान, सम्मान और आत्मविश्वास प्रदान करता है, ताकि वे अपनी कला के माध्यम से भारतीय संस्कृति की अमिट छाप विश्वपटल पर छोड़ सकें।

हम कामना करते हैं कि "प्रेरणा" का यह स्वर देसी आत्मा की गूंज बनकर निरंतर आगे बढ़ता रहे और हर युवा कलाकार को अपनी पहचान पर गर्व करने की शक्ति देता रहे।

डॉ. संध्या यू. सिर्सिकर
सहायक प्राध्यापिका

हिंदी संघ के अध्यक्ष का संदेश

हिन्दी विश्व की सभी भाषाओं में सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा है। और यह हमें विश्व में भारतीयता की पहचान भी दिलाती है। इस भाव से प्रेमपूर्वक हिन्दी को स्वीकारने से सभी भारतीय एक सूत्र में बंध जाएंगे और आपसी दूरियाँ भी मिट जाएंगी। हिंदी केवल एक भाषा नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान का प्रतीक है। यह वह भाषा है, जिसमें हमने बोलना सीखा, भावनाएँ व्यक्त कीं और अपने विचारों को आकार दिया। हिंदी हमें आपस में जोड़ती है और देश के कोने–कोने में रहने वाले लोगों के बीच एकता का सेतु बनती है। हिन्दी विभाग द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका ''प्रेरणा'' का नया अंक आप के हाथ में है। हिन्दी संघ संत अलोशियस मानित विश्वविद्यालय का एक सक्रिय संघ है। संघ का हमेशा प्रयत्न रहा है कि कॉलेज के विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभाओं को उभार कर उन्हें प्रोत्साहित कर प्रदर्शन का मंच प्रदान किया जाए। छात्रों के इस प्रयास में कई तृटियाँ होंगी। पर उभरते कलाकारों के इस प्रयत्न को स्वीकारने में हमें आनंद ही होना चाहिए। इस पत्रिका के माध्यम से मेरा यह निवेदन है कि हिन्दी में पढ़ना आपकी कमजोरी नहीं, बल्कि आपकी पहचान और शक्ति है। हिंदी ने आपको गहराई से सोचने, सही ढंग से समझने और अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की क्षमता दी है। लेखन केवल शब्दों को काग़ज़ पर उतारना नहीं है, यह आपके विचारों, रचनात्मकता और दृष्टिकोण को दुनिया तक पहुँचाने का माध्यम है। आपके लेख समाज, शिक्षा और युवा सोच को नई दिशा दे सकते हैं। भाषा कोई बाधा नहीं है। हिंदी में लिखा गया हर लेख आपकी समझ, आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति की शक्ति को दर्शाता है। छात्रों से विशेष निवेदन है कि वे हर अंक को अपने लेखों और विचारों द्वारा समृद्ध करें।

सुश्री. रॉयसी रेखा ब्रग्गस
सहायक प्राध्यापिका

हिंदी संघ के सचिव का संदेश

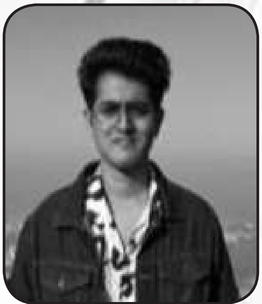

संत अलोशियस (मानित) विश्वविद्यालय, जो मंगळूरु में स्थित है, अपनी समृदध सांस्कृतिक विविधता और शैक्षिक उत्कृष्टता के लिए जाना जाता है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित प्रेरणा पत्रिका छात्रों को अपनी साहित्यिक और कलात्मक प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने का एक सशक्त मंच प्रदान करती है। यह पत्रिका विद्यार्थियों को हिंदी भाषा में अपने विचारों को प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करने का अवसर देती है और हमारे विश्वविदयालय के बहुसांस्कृतिक वातावरण को प्रतिबिंबित करती है । हिंदी संघ विश्वविद्यालय में एक सक्रिय छात्र संगठन के रूप में कार्य करता है, जो हिंदी भाषा और संस्कृति के उपयोग, संरक्षण और सराहना को बढ़ावा देता है। यह संघ हिंदी में सांस्कृतिक कार्यक्रमों, चर्चाओं और प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है, जिससे छात्रों में रचनात्मकता, अभिव्यक्ति कौशल और भाषा के प्रति सम्मान की भावना विकसित होती है। पत्रिका का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी भाषा तथा उसकी समृद्ध धरोहर से जोड़ना और उन्हें सशक्त साहित्यिक अभिव्यक्ति का मंच उपलब्ध कराना है।

दक्षिण भारत के संदर्भ में, यद्यपि यह क्षेत्र हिंदीभाषी नहीं है, फिर भी स्कूलों और कॉलेजों में हिंदी को व्यापक रूप से पढ़ाया जाता है और विशेष रूप से पाठ्यक्रम के महत्त्वपूर्ण अंग के रूप में शामिल किया जाता है। हमारे सहित अनेक शैक्षणिक संस्थान हिंदी को एक महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में स्वीकार करते हैं, क्योंकि यह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संवाद की एक प्रभावी भाषा के रूप में उभर रही है। इससे देश के विभिन्न प्रांतों से आने वाले विद्यार्थियों को एक साझा संपर्क भाषा प्राप्त होती है, जो आपसी समझ, सहयोग और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सुदृढ़ करती है। भारत के विविध क्षेत्रों से हमारे विश्वविदयालय में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया जाता है, ताकि वे देश की व्यापक संस्कृति से गहरा जुड़ाव महसूस कर सकें। दक्षिण भारत में हिंदी का संवेदनशील और सम्मानपूर्ण प्रयोग न केवल राष्ट्रीय एकता और समरसता को सुदृढ़ करता है, बल्कि विभिन्न भाषाई पृष्ठभूमि वाले लोगों के बीच संवाद, सौहार्द और सांस्कृतिक मेल मिलाप को भी नई दिशा प्रदान करता है।

रफ़ान
सचिव, हिंदी संघ

गुरु का गौरव

गुरु के ज्ञान की रोशनी
हमें सच्चा मार्ग दिखाती है
राह भटक जाते हैं हम
तो सही दि शा दिखाती है

गुरु ये गौरव इनके अनेक रूप
माता पिता, दोस्त, शिक्षक, भगवान
बनकर जीवन में आते हैं
और बनाते हैं अनेक संदुर स्वरूप

जीवन देने वाले दाता
हमारे माता पिता
पहली शिक्षा हमारे संस्कार है
जो हम लेकर जाते हैं
घर से बाहर ।

शिक्षा का घर
विद्या का मंदिर
विद्यालय बनाता है
हमारे कल का भविष्य ।

शिक्षक हमारे जीवन को उद्देश्य देते हैं
उद्देश्य ही जीवन सार्थक बनाता है
दोस्त हमें सहारा देते हैं
हर दखु का नुस्का दे
सदा मुस्कुराहट ला देते हैं

आस्था और श्रद्धा से पुकारते
हम अनेक नाम हैं इनके
जीवन को ये देते हैं आशा की किरणें
पूजते जिसे सब
परम गरु? भगवान
यह हमारे गौरव
और इनके अनेक नाम ।

जहान्वी प्रशांत कोव्यान
द्वितीय बी.कॉम
हाजरी संख्या : 24130932

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : विद्यार्थियों के लिए चुनौतियाँ और संभावनाएँ

(निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान, संत अलोशियस मानित वि वि में)

भूमिका

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण आधार होती है। बदलती वैश्विक परिस्थितियों, तकनीकी विकास और रोजगार की नई आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने वर्ष 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) लागू की। यह नीति लगभग 34 वर्षों के बाद लाई गई एक व्यापक और दूरदर्शी शिक्षा सुधार नीति है, जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मुख्य विशेषताएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पारंपरिक 10+2 शिक्षा प्रणाली को बदलकर 5+3+3+4 संरचना लागू की गई है, जो बच्चों की मानसिक और शारीरिक विकास अवस्था के अनुरूप है। प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा देने पर जोर दिया गया है, जिससे बच्चों की समझ और सीखने की क्षमता बढ़े।

इस नीति में रटने वाली शिक्षा प्रणाली के स्थान पर समझ, विश्लेषण और व्यावहारिक ज्ञान को महत्व दिया गया है। कला, विज्ञान और वाणिज्य जैसे विषयों की सीमाओं को समाप्त कर बहुविषयक शिक्षा को बढ़ावा दिया गया है। इसके साथ ही कौशल आधारित और व्यावसायिक शिक्षा को भी स्कूल स्तर से शामिल किया गया है।

विद्यार्थियों के लिए संभावनाएँ

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थियों के लिए अनेक नई संभावनाएँ लेकर आई है। अब विद्यार्थी अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार विषयों का

चयन कर सकते हैं। बहुविषयक शिक्षा प्रणाली से विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान की क्षमता विकसित होती है।

उच्च शिक्षा में मल्टीपल एंट्री और एग्जिट सिस्टम लागू किया गया है, जिससे विद्यार्थी किसी कारणवश पढ़ाई छोड़ने पर भी प्रमाण पत्र या डिग्री प्राप्त कर सकते हैं। डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन कोर्स और ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म के विस्तार से ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला है।

विद्यार्थियों के लिए चुनौतियाँ

हालाँकि यह नीति अत्यंत उपयोगी है, लेकिन इसके क्रियान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। स–भी विद्यालयों में समान डिजिटल सुविधाएँ और प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और तकनीकी संसाधनों की कमी एक बड़ी समस्या है।

नई शिक्षा प्रणाली को समझने और अपनाने में विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को समय लग सकता है। यदि शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण नहीं मिला, तो नीति के उद्देश्यों को पूरी तरह प्राप्त करना कठिन हो सकता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक ऐतिहासिक और क्रांतिकारी कदम है। यह नीति विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रखकर उन्हें कौशल, नैतिक मूल्यों और आत्मनिर्भरता की ओर ले जाती है। यदि इस नीति को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो यह भारत को एक सशक्त, शिक्षित और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

सुरज
प्रथम बी.ए.
हाजरी संख्या : 25110210

यह दुनिया कितनी अजीब है

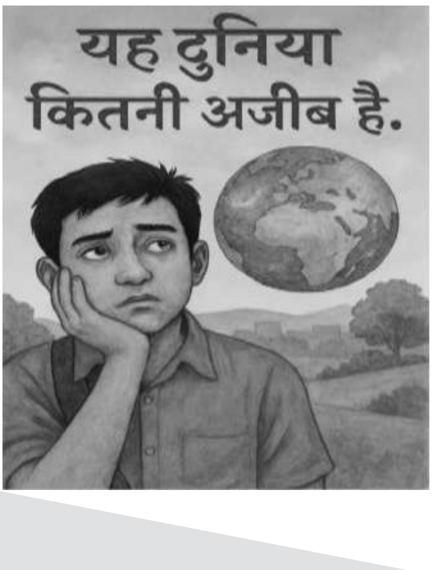

कहते हैं कि मदद करना अच्छी बात है, और इससे ख़ुदा हमें मदद करेगा। पर जब तुम किसी व्यक्ति को रास्ते में बचाते हो, तो कहते हैं? 'तुम्हें करने की क्या ज़रूरत थी, कोई और कर लेता।' अगर तुम कुछ बिना पैसे के देते हो, तो पूछते हैं? 'पागल हो क्या?'

यही है हमारी अजीब दुनिया, इंसानों की दुनिया ।

फातिमा हैफ़ा
द्वितीय बीए– बी
हाजरी संख्या : 24111407

अश्रु और दुआ

कभी सोचा नहीं, तेरे बिना, मेरा क्या वजूद होगा?
हर सुख, हर शांति, हर इबादत, तुझमें ही मौजूद होगा।
तेरा माथा चूमा मैंने, तो लगा मंदिर का द्वार,
तेरी झुर्रियों में छिपा है, मेरा सारा बचपन और प्यार।

जब रात अँधेरी होती थी, और डर सताता था।
तेरा हाथ पकड़कर ही, मुझे चैन आ जाता था।
वो तेरा रोकर मेरा दर्द महसूस करना,
वो तेरा बिन बोले मेरी हर ज़रूरत को पहचान लेना।

हम दूर चले जाते हैं, अपने सपनों की राह में,
पर तू वहीं खड़ी रहती है, नम सी आँखों की आह में।
तेरे आँसू गिरते हैं जब, तो धरती भी काँप जाती है,
तेरी एक दुआ से ही तो मेरी किस्मत जाग पाती है।

क्या दूँ तुझे, इस ममता का कोई मोल नहीं है।
तू देवता है मेरी, तेरा कोई तोल नहीं है।
बस सर झुका के, करता हूँ एक गुज़ारिश रब से:
मेरी उम्र भी लग जाए, मेरी प्यारी माँ को सब से।

खुश्बू चौधरी
द्वितीय बीए– ए
हाजरी संख्या : 24110411

भगत सिंह और उनकी देशभक्ति

भगत सिंह भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रेरणादायक और प्रतिष्ठित क्रांतिकारियों में से एक हैं। उनकी देशभक्ति केवल भावनाओं या साहसिक कार्यों तक सीमित नहीं थी, बल्कि गहरी राजनीतिक समझ, सामाजिक जागरूकता और न्याय के प्रति अटूट समर्पण पर आधारित थी। कम उम्र में ही उन्होंने समझ लिया था कि देशभक्ति केवल देश से प्रेम करना नहीं, बल्कि उसके लोगों की गरिमा और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना है।

स्वतंत्रता सेनानियों के परिवार में जन्मे भगत सिंह बचपन से ही प्रतिरोध की कहानियों से प्रभावित थे। जलियांवाला बाग हत्याकांड ने उनके मन पर गहरा प्रभाव छोड़ा और उन्होंने अपना जीवन भारत की स्वतंत्रता को समर्पित करने का संकल्प ले लिया। जहाँ कई स्वतंत्रता सेनानियों ने अहिंसा का मार्ग अपनाया, वहीं असहयोग आंदोलन की वापसी ने उन्हें विश्वास दिलाया कि ब्रिटिश सरकार को जवाबदेह बनाने के लिए और अधिक सशक्त कदम उठाने की आवश्यकता है। उनकी देशभक्ति भावनात्मक निष्ठा से विकसित होकर एक क्रांतिकारी और वैचारिक प्रतिबद्धता बन गई, जिसका उद्देश्य जनता को औपनिवेशिक अत्याचार के विरुद्ध जागृत करना था।

भगत सिंह के लिए देशभक्ति कभी अंधी नहीं थी। उनका मानना था कि सच्चे राष्ट्रप्रेम के लिए ईमानदार आलोचना और एक न्यायपूर्ण समाज की दृष्टि आवश्यक है। मार्क्स, लेनिन और विश्वभर के समाजवादी आंदोलनों से प्रभावित होकर उन्होंने कहा कि गरीबी, जाति–भेद और शोषण ख़त्म किए बिना भारत की स्वतंत्रता अधूरी रहेगी। उनका प्रसिद्ध निबंध “Why I Am an Atheist” यह दर्शाता है कि उनका साहस अंधविश्वास से नहीं, बल्कि तर्कसंगत विश्वास से उत्पन्न हुआ था। उनकी देशभक्ति बौद्धिक भी थी और व्यावहारिक भी।

भगत सिंह के प्रमुख क्रांतिकारी कार्य उनकी परिपक्व देशभक्ति के प्रतीक थे। 1928 में सॉण्डर्स की हत्या क्रूर औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध एक प्रतीकात्मक प्रतिरोध था। 1929 की असेंबली बम घटना किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं, बल्कि “बहरे को सुनाने के लिए थी, जिससे ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाए जा रहे दमनकारी कानूनों का विरोध किया जा सके। जेल में भी उनका भूख हड़ताल भारतीय राजनीतिक कैदियों के अधिकारों के लिए थी, जो यह दर्शाती है कि उनके लिए देशभक्ति का अर्थ हर कीमत पर न्याय के लिए खड़ाहोना था।

23 वर्ष की आयु में उनकी शहादत ने उन्हें निडर बलिदान का राष्ट्रीय प्रतीक बना दिया। पूरे देश ने उनमें ऐसा देशभक्त देखा जिसका भारत प्रेम शुद्ध, विचारशील और अडिग था। नौ दशकों बाद भी उनकी लिखाई, विचार और कार्य विद्यार्थियों, समाजसेवियों और विचारकों को प्रेरित करते हैं। भगत सिंह की देशभक्ति हमें सिखाती है कि राष्ट्रप्रेम का वास्तविक अर्थ है? अपने देश को असमानता, अज्ञानता और भय से मुक्त बनाना।

अंततः, भगत सिंह ने ऐसी देशभक्ति को जिया जो साहसी, प्रश्न करने वाली और प्रगतिशील थी। उन्होंने केवल स्वतंत्र भारत का सपना नहीं देखा, बल्कि एक ऐसे भारत का, जो न्याय, समानता और जनता के सशक्तिकरण पर आधारित हो। उनका जीवन हमें याद दिलाता है कि सच्ची देशभक्ति में भावनाओं के साथ–साथ उद्देश्य भी आवश्यक है।

एल्विन मरियन नोरोन्हा (25125405)
आदित्या एन् शेनॉय (25126502)
प्रथम बी.एस्सी

प्रकृति की सुंदरता

नभ की नीलिमा, धरा का आँचल,
प्रकृति की रचना, अद्भुत और पावन।
सूरज की किरणें, करतीं अभिनंदन,
जीवन का संगीत, मीठा और मनभावन।

पहाड़ों की ऊँचाई, देती है साहस,
झरनों की कलकल, भरती है उल्लास।
हवा का स्पर्श, जैसे माँ का दुलार,
हरियाली में छिपा, सृष्टि का सार।

फूलों की मुस्कान, भौरों का गुंजन,
रंगों का संगम, कितना मोहक ये उपवन।

खुश्बू चौधरी
द्वितीय बीए– ए
हाजरी संख्या : 24110411

बहुत दिनों बाद एक शायरी सूझ आई है
इस बदनसीब दिल को किसकी याद आई है
कुछ दोस्त थे, कुछ थे हमारे भी करीबी
पर शायद अब इन दिलों के बीच बहुत है दूरी
कोई दिल में बैठ गया तो कोई हमसे रूठ गया
कोई ज़िंदगी भर का वादा करके भूल गया
कोई दोस्ती में नाकाम रहा तो कोई प्यार में
पर उनकी कोई गलती नहीं, गलती है हम में
कि किसी के साथ बहुत जुड़ जाते हैं
और जुदाई में अलविदा तक नहीं कह पाते हैं
पता नहीं ख़ुदा इन्हें ज़िंदगी में क्यों लाता है
इसी ग़म में दिल आँसुओं में डूब जाता है

कभी शायर बनना तो नहीं चाहता था
पर शायद किस्मत ने यही लिखा था
कि किसे के ग़म में रोएगा तू
किसकी याद में आँसू भी बहाएगा
आख़िर के लिए तो बस इतना ही
कि उन्हें ख़ुदा सलामत रखे
खैर, हमें कोई याद क्यों ही करेगा।

अदित कुमार
प्रथम बी.कॉम
हाजरी संख्या : 25130412

हो! सुनो मेरे धनश्याम!

जपूँ मैं राधे का नाम,
हो! सुनो मेरे घनश्याम।
राधा है प्यारी आप है रणछोड़,
हे कान्हा, आप बड़े है माखन चोर।
आँखों में काजल पैर में पायल,
राधा है आपके प्रेम में घायल।
प्रीत में रास रचावे राधा के संग,
आई गोपियाँ रास रचाने आपके संग।
गोलोक में है आप राधा के श्याम,
हो! सुनो मेरी ये मधुर वाणी हे! मेरे घनश्याम।
बंसी की धुन पर सब सुध–बुध खोया,
राधे के रंग में सारा जग है भिगोया।
यमुना के तट पर जो मुरली बजाई,
पशु–पक्षी सबने सुध अपनी गँवाई।
हृदय के मंदिर में मूरत तुम्हारी,
बलिहारी जाऊँ मैं तुम पे मुरारी।
चरणों में तेरे है मेरा ठिकाना,
भूलूँ न कभी मैं ये रिश्ता पुराना।
जय श्री राधाकृष्णा!

भागवंती कुमारी
द्वितीय बीए
हाजरी संख्या : 24110408

हौसलों की उड़ान

रास्ते मुश्किल हों अगर,
तो घबराना नहीं,
अँधेरों से लड़कर ही
रोशनी को पाना है कहीं।

हर ठोकर एक सीख है,
हर हार में जीत छुपी,
जो गिरकर फिर संभल जाए,
उसी की तक़दीर है लिखी।

खुद पर विश्वास रखो,
ये दुनिया खुद मान जाएगी,
मेहनत की आग में तपकर
किस्मत भी मुस्कुराएगी।

आज नहीं तो कल सही,
मंज़िल जरूर मिलेगी,
जो रुका नहीं, जो झुका नहीं,

एलन अरान्हा
द्वितीय बीबीए
हाजरी संख्या : 24140116

शिक्षा में डिजिटल विभाजन

21वीं सदी को डिजिटल युग कहा जाता है। इस युग में शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, व्यापार और हर क्षेत्र में तकनीक का प्रयोग तेजी से बढ़ा है। खासकर शिक्षा क्षेत्र में इंटरनेट, स्मार्टफोन, डिजिटल क्लास, ई–लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म, वीडियो लेक्चर और डिजिटल लाइब्रेरी ने नए अवसर खोले हैं। मगर तकनीकी विकास के साथ एक नया अंतर भी उभर रहा है जिसे "डिजिटल विभाजन" कहा जाता है। डिजिटल विभाजन यानी वे लोग जिनके पास आधुनिक डिजिटल तकनीक की सुविधाएँ हैं और वे लोग जिनके पास यह सुविधाएँ नहीं पहुँच पातीं, इनके बीच की दूरी।

भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में यह समस्या बहुत बड़ी है। भारत में जनसंख्या का एक हिस्सा महानगरों और शहरों में रहता है, जहाँ इंटरनेट तेज है, स्मार्टफोन साधारण बन चुका है और डिजिटल शिक्षा की सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध हैं। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्र में आज भी नेटवर्क कमजोर है, इंटरनेट महंगा है, बिजली की कटौती अधिक होती है और डिजिटल डिवाइस खरीदना मुश्किल है। इस कारण दोनों क्षेत्रों के छात्रों में सीखने और अवसर प्राप्त करने का अंतर बढ़ता जा रहा है।

कोविड–19 महामारी के दौरान डिजिटल विभाजन पहली बार देश की बड़ी जनसंख्या के सामने उजागर हुआ। जब स्कूल और कॉलेज बंद हुए तो शिक्षा का पूरा बोझ ऑनलाइन माध्यम पर आ गया। लाखों बच्चे ऑनलाइन कक्षाओं में भाग नहीं ले पाए, क्योंकि उनके पास न तो स्मार्टफोन था, न लैपटॉप, और न ही स्थिर इंटरनेट कनेक्शन। कई परिवारों में एक ही स्मार्टफोन होता था, जिसे माता–पिता के काम और बच्चों की पढ़ाई दोनों के लिए उपयोग करना पड़ता था। कई छात्रों को पहाड़ों, खेतों या सड़कों पर लंबी दूरी तक जाकर

नेटवर्क पकड़ना पड़ता था। यह स्थिति बताती है कि डिजिटल साधन सिर्फ सुविधा नहीं बल्कि शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुके हैं।

डिजिटल विभाजन के कारण केवल भौगोलिक ही नहीं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और लैंगिक भी हैं। आर्थिक कारणों में डिवाइस की कीमत, इंटरनेट की लागत और घर की आय शामिल है। गरीब परिवारों में शिक्षा के लिए डिजिटल उपकरण खरीदना प्राथमिकता नहीं बन पाता। सामाजिक कारणों में डिजिटल साक्षरता की कमी शामिल है। कई लोग तकनीक का उपयोग करना नहीं जानते, जिससे डिजिटल संसाधन होते हुए भी उनका लाभ नहीं उठा पाते। लैंगिक अंतर भी देखने को मिलता है; कई क्षेत्रों में लड़कियों को मोबाइल या इंटरनेट उपयोग करने पर रोक या सीमाएँ होती हैं।

डिजिटल विभाजन का प्रभाव केवल वर्तमान शिक्षा तक सीमित नहीं रहता, बल्कि भविष्य पर भी गहरा असर डालता है। डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म कौशल, कोडिंग, डेटा विश्लेषण, ऑनलाइन कोर्सेज और आधुनिक तकनीकी ज्ञान आज के रोजगार बाजार की माँग बन चुके हैं। यदि छात्र डिजिटल साधनों से वंचित रहते हैं तो वे रोजगार और कौशल विकास की प्रतियोगिता में पिछड़ सकते हैं, जिससे सामाजिक और आर्थिक अवसरों की असमानता और बढ़ती है।

इस चुनौती को कम करने के लिए सरकार, शैक्षणिक संस्थान और समाज सभी स्तरों पर प्रयास आवश्यक हैं। सरकार ने ''डिजिटल इंडिया, ''भारतनेट परियोजना, ''पी.एम. वाणी, और स्कूलों में स्मार्ट क्लास जैसी योजनाएँ शुरू की हैं, जिनका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों तक इंटरनेट पहुँचाना और डिजिटल संसाधन उपलब्ध कराना है। कई राज्य सरकारें भी छात्रों को टैबलेट, मुफ्त इंटरनेट पैक और डिजिटल सामग्री उपलब्ध करा रही हैं। इसके अलावा गैर–सरकारी संस्थाएँ (NGOs) भी डिजिटल शिक्षा के लिए गाँवों में प्रशिक्षण केंद्र चला रही हैं।

लेकिन तकनीकी साधनों की उपलब्धता ही पर्याप्त नहीं है। लोगों में डिजिटल साक्षरता बढ़ाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। यदि लोग डिवाइस और इंटरनेट को सुरक्षित और उपयोगी रूप में इस्तेमाल करना सीखेंगे, तभी डिजिटल शिक्षा का वास्तविक लाभ मिल सकेगा। साथ ही घरों, विशेषकर लड़कियों और कमजोर वर्गों के लिए डिजिटल पहुँच सुनिश्चित करना जरूरी है ताकि शिक्षा में लैंगिक और सामाजिक समानता कायम हो सके।

अंत में कहा जा सकता है कि डिजिटल विभाजन आधुनिक भारत की बड़ी सामाजिक चुनौती है। शिक्षा तभी सार्थक और समतामूलक बनेगी जब हर छात्र को डिजिटल साधनों तक समान और सुरक्षित पहुँच मिले। डिजिटल पहुंच का विस्तार न केवल व्यक्तिगत विकास बल्कि राष्ट्रीय विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। यदि भारत को डिजिटल रूप से सशक्त और शैक्षिक रूप से प्रगतिशील राष्ट्र बनाना है, तो डिजिटल विभाजन को कम करना और शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल समानता स्थापित करना अनिवार्य है।

वंशी गिरिश शट्टी
द्वितीय बी एस्सी
हाजरी संख्या : 24125417

बस एक बार

एक बार तुमसे मिलने की बड़ी तमन्ना करती है
तुम्हारी एक झलक पाने को ये दिल तड़पता है
अपना आँचल लहराकर एक बार मेरी तरफ आओ दौड़कर
बस एक बार मेरी तरफ आना, फिर न देखना मुड़कर
अपने हाथों से बस एक बार मेरी बाहों को पकड़ लो
अपने होंठों से बस एक बार इन गालों को चूम लो
एक बार फिर इन कानों में तुम्हारा गाना गुनगुनाओ
बस एक बार अपने पैरों में पायल पहनकर छनछनाती आओ
एक बार, बस एक बार हमारी तरफ आओ दौड़कर
बस एक पल के लिए रहमत दो उन आँखों से देखकर
इतने पास रहकर भी इतने दूर न रहो
बस हमारी गलती क्या थी, ये एक बार कहो
अब इन आँखों को और मत तरसाओ
बस एक बार हमसे मिलने आ जाओ।

अदित कुमार
प्रथम बी.कॉम
हाजरी संख्या : 25130412

रैगिंग नहीं दोस्ती

रैगिंग नहीं दोस्ती है पसंद, मिलकर बढ़ाओ हर कदम।
रैगिंग छोड़ो भविष्य बनाओ।
रैगिंग एक बिमारी है इसका इलाज एकता और दोस्ती है।
रैगिंग पर लगाओ पूर्ण विराम आपसी भाईचारा हो हमारा काम।
ज़ान की ज्योति जलाओ, रैगिंग को दूर भगाओ।

रोहन एस्टन लस्राडो
द्वितीय बीबीए– बी
हाजरी संख्या : 24140240

गलतियाँ–जीवन के सबसे सच्चे शिक्षक

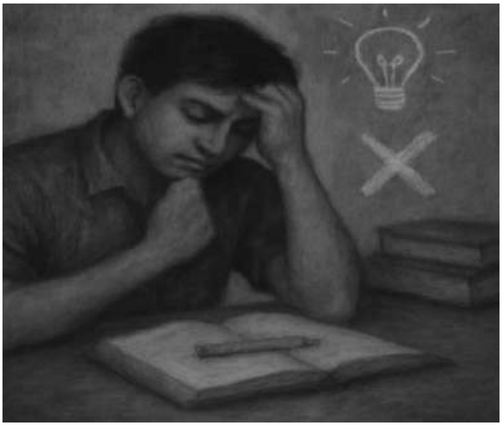

मानव जीवन में गलतियाँ होना बिल्कुल स्वाभाविक है। कोई भी व्यक्ति जन्म से ही पूर्ण नहीं होता। सीखने और आगे बढ़ने की प्रक्रिया में गलतियाँ हमारा मार्गदर्शन करती हैं, फिर भी समाज में गलती को अक्सर कमजोरी या असफलता से जोड़ दिया जाता है। इसी डर के कारण कई लोग नए प्रयास करने से बचते हैं और अपने भीतर की संभावनाओं को पहचान नहीं पाते। बचपन से ही हमें यह सिखाया जाता है कि गलती करना बुरा है। परीक्षा में कम अंक आना, किसी कार्य में चूक हो जाना या गलत निर्णय लेना – इन सभी को नकारात्मक रूप में देखा जाता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि हर गलती हमें कुछ न कुछ सिखाती है। वह हमें सोचने, समझने और स्वयं में सुधार करने का अवसर देती है।

जो व्यक्ति अपनी गलतियों को स्वीकार करता है, वह मानसिक रूप से अधिक मजबूत बनता है। गलतियाँ हमें धैर्य, जिम्मेदारी और सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती हैं। इतिहास गवाह है कि सफल व्यक्तियों ने अपने जीवन में अनेक असफलताओं का सामना किया, लेकिन उन्होंने उनसे सीख लेकर आगे बढ़ना चुना। इसलिए गलतियों से डरने के बजाय उन्हें जीवन का शिक्षक मानना चाहिए। गलतियाँ हमें गिराने के लिए नहीं, बल्कि हमें बेहतर इंसान बनाने के लिए होती हैं। जो उनसे सीख लेता है, वही जीवन में सच्ची प्रगति करता है।

अर्फा अल्ताफ शेख
प्रथम बी कॉम
हाजरी संख्या : 25130226

बड़े सपने

बड़े सपने देखो, आगे बढ़ते जाओ, मेहनत से हर
मुश्किल को आसान बनाओ।
आज गिरो तो कल फिर उठ जाना, हार को अपनी ताकत बनाना।
खुद पर विश्वास रखना हर हाल में, सफलता ज़रूर मिलेगी,
बस अपने कमाल में।

सौरव ए
प्रथम बी.कॉम
हाजरी संख्या : 25130479

अजनबी शहर का अपना आशियाना

निकल पड़ी थी अनजान डगर पर, मन में लेकर थोड़ा डर,
सोचा न था, ये बेगाना शहर ही बन जाएगा मेरा घर।
खुद पर था संदेह ज़रा, और अजनबियों की वो भीड़ बड़ी में,
मैं चुपचाप सी, सहमी सी, अपनी ही सीमाओं में थी खड़ी।
पर देखो, वक़्त की लहरों ने कैसा जादू दिखलाया है,
डर के उन पुराने सायों को, पीछे कहीं छुड़ाया है।
जो पंछी कभी घबराती थी, पंख पसारने से अपने,
आज वही उड़ रही बैखौफ सी, बुनने को नए–नए सपने।
हदें पार की, ज़ंजीरें तोड़ीं, एक नई शक्ति को पाया है,
इन अजनबियों की महफ़िल में ही, मैंने अपनापन पाया है।
सुकून अब इन चेहरों में है, ये शहर अब मेरा हिस्सा है,
बीता हुआ वो 'डर' मेरा, अब महज़ एक पुराना किस्सा है।
वक़्त मरहम है, वक़्त ही ताकत, वक़्त ने दी है नई जान,
अब इस आज़ाद पंछी की है, पूरी दुनिया, पूरा आसमान।

अरुशी कीसपोट्टा
प्रथम बी.कॉम
हाजरी संख्या : 25130183

साल 2019

नया साल था
नयी class, class teacher भी नयी
नये दोस्त हुए
नये किताब मिले
नया chapter जिंदगी का
सब कुछ था नया।

इतने नये चीज़े होने पर
नया ऐसा कुछ आया
जिसने कर दिया सभी को दुःख

चले गए काम सभी के,
चली गई school सभी की।
छिपाने लगे हम अपने चेहरे,
घर के अंदर लगे हम रहने।

तबी भी सब कुछ नया था,
उस साल में सब कुछ नया था।

प्रीन्सिया डी सोजा
द्वितीय बी सी ए डी
हाजरी संख्या : 24150457

चित्रांकन

मुनिरा गांधी
हाजरी संख्या :24121153, द्वितीय बीएस्सी

प्रेरणा-2025

प्रेरणा

प्रेरणा 2025
क्षितिज के पार

ST ALOYSIUS

ST ALOYSIUS
प्रेरणा
An Inter - Collegiate Hindi Fest

हिंदी संघ की गतिविधियाँ